भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या *149
बुधवार, 13 दिसंबर, 2023 को उत्तर दिए जाने के लिए

समुद्री विज्ञान और पारिस्थितिकी में सहयोग हेतु समझौता

*149. श्रीमती चिंता अनुराधा:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) समुद्री विज्ञान और पारिस्थितिकी में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत और वियतनाम के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों का ब्यौरा क्या है;
(ख) इसका क्या प्रभाव पड़ने का अनुमान है;
(ग) समुद्री विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग के लिए हस्ताक्षरित ऐसे अन्य समझौता ज्ञापनों का ब्यौरा क्या है;
(घ) क्या सरकार ऐसे और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने के लिए अन्य देशों के साथ बातचीत कर रही है; और
(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरेन रीजीजू)

(क) से (ड.): विवरण सभा पटल पर रखा है।

"समुद्री विज्ञान और पारिस्थितिकी में सहयोग हेतु समझौता " से संबंधित लोक सभा तारांकित प्रश्न सं. *149, जिसका उत्तर 13 दिसंबर, 2023 को दिया जाना है, के भाग (क) से (ङ) के उत्तर में उल्लिखित विवरण।

(क) वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के लिए भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) और वियतनाम सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ नैचुरल रिसोर्स एंड एनवॉयर्नमेंट (MONRE) के बीच दिनांक17 दिसंबर 2021 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिसका उद्देश्य समुद्री विज्ञान और पारिस्थितिकी के क्षेत्र में ज्ञान साझा करना और क्षमता निर्माण करना है। भारत के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का संबद्ध कार्यालय राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (NCCR) तथा MONRE के अतर्गत वियतनाम एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ सी एंड आईलैंड (VASI) एक साथ मिलकर समुद्री विज्ञान और पारिस्थितिकी के क्षेत्र में काम कर रहे हैं, और अक्टूबर 2023 के दौरान वियतनाम के एक प्रतिनिधिमंडल ने दौरा किया है और कार्य-योजना तैयार की है।

(ख) परियोजना के लाभ/परिणामों में क्षमता निर्माण करना और तटीय संरक्षण की सर्वोत्तम परिपाटियों का ज्ञान साझा करना, आपदा जोखिम में कमी लाना, तटीय कटाव का शमन करना, और तटीय सुरक्षा रणनीतियों के कार्यान्वयन के लिए प्रायोगिक कार्य स्थलों की पहचान करना भी शामिल है।

(ग) समुद्री विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग के लिए हस्ताक्षरित अन्य समझौता ज्ञापनों (MoU) का विवरण नीचे दी गई तालिका में वर्णित है।

क्र.सं	**वह देश जिसके साथ भारत का समझौता ज्ञापन है**
1.	सेंटर फोर एनवायरनमेंट**,** फिशरीज एंड एक्वाकल्चर साइंस (सीईएफएएस)**,** यूके ने समुद्री कूड़े और सूक्ष्म प्लास्टिक अनुसंधान के लिए 2019 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।
2.	तटीय और समुद्री क्षेत्रों के प्रशासन के लिए सर्वोत्तम परिपाटियां विकसित करने तथा समुद्रवर्ती सहयोग और समुद्र अनुसंधान के लिए भारत-नॉर्वे समुद्र वार्ता पर 8 जनवरी**,** 2019 को हस्ताक्षर किए गए।
3.	क्रम संख्या 2 पर समझौता ज्ञापन के तहत**,** एकीकृत समुद्र प्रबंधन के लिए नॉर्वे के जलवायु और पर्यावरण मंत्रालय ने 18 फरवरी**,** 2020 को आशय पत्र (एलओआई) पर हस्ताक्षर किए।
4.	गहरे समुद्र की प्रौद्योगिकियों के लिए दी फ्रेंच रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर एक्सप्लॉइटेशन ऑफ द सी (IFREMER)**,** फ्रांस के साथ जुलाई**,** 2023 में।
5.	समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए मालदीव गणराज्य के मत्स्यन**,** समुद्री संसाधन एवं कृषि मंत्रालय के साथ अगस्त**,** 2022 में ।
6.	समुद्र विज्ञानों और जलवायु परिवर्तन पर प्रशांत द्वीप के देशों के साथ बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने मई 2023 में फ़िजी में सतत तटीय और समुद्र अनुसंधान संस्थान **(**SCORI) की स्थापना की।

7.	समुद्री कूड़े पर अनुसंधान के लिए जून 2022 के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग तथा जैव प्रौद्योगिकी विभाग के साथ पर्यावरण, कृषि विज्ञान और स्थानिक योजना (FORMAS) के लिए स्वीडिश अनुसंधान परिषद के साथ एक PoC पर हस्ताक्षर किए गए।
8.	अप्रैल 2008 के दौरान पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और NOAA के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के तहत, मानसून के बेहतर पूर्वानुमान के लिए थर्मोहेलिन संरचना और संख्यात्मक मॉडलिंग को समझने के लिए समुद्र विज्ञान और मौसम विज्ञान संबंधी डेटा के मापन के लिए हिंद महासागर में RAMA मूरिंग्स को तैनात किया जा रहा है और इसका रखरखाव किया जा रहा है।
9.	जापान एजेंसी फॉर मरीन अर्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, जापान और राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केन्द्र ने आर्कटिक क्षेत्र में समुद्री कूड़ा प्रदूषण अनुसंधान, माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण और आकलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के अनुप्रयोग पर सितंबर, 2021 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

(घ) और (ड.) समुद्र विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग के लिए अन्य देशों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के पास कोई प्रस्ताव लंबित नहीं है।

*****